



जनवरी: 2022

वर्ष : 5 अंक : 4

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से



आप सभी पाठकों को नए वर्ष, 2022 की हार्दिक बधाई और ढेरों शुभकामनाएँ।

संस्थान का मासिक समाचार, जनवरी 2022 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

नए साल की शुरुआत हमेशा नई उमंग, नई उम्मीदें, नए सपनें, नया लक्ष्य, नया जोश और नए वायदों के साथ होती है, ऐसे वायदे जो हम स्वयं के साथ करते हैं कि इस वर्ष में हमारी योजनाएँ क्या-क्या होगी। नए वर्ष का शुभारंभ हमारे लिए एक प्रेरणा और संकल्प का अवसर प्रदान करता है ताकि हम बीते वर्ष से सीख ले सकें और भावी उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्य कर सकें। नया साल हमेशा आगे बढ़ने की सीख देता है अतः हमें अपना एक लक्ष्य तय करना चाहिए कि आने वाले साल में हम क्या नया करेंगे। यहाँ मैं एक बात कहना चाहूँगा कि पुराना वर्ष का अर्थ है अनुभव से भरा काल और नए साल का अर्थ है अनुमानित लक्ष्य। यदि हम अनुभव के आधार से अनुमानित कार्यों की योजना को स्वरूप दें तो सफलता की संभावना अधिक होगी।

वर्ष 2021 को विश्व व्यापी कोविड महामारी की दृष्टि से देखा जाए तो इस वर्ष को इसके पूर्ववर्ती वर्ष 2020 का ही क्रम माना जा सकता है पर हमारे संस्थान के कार्यों पर इस महामारी का विशेष प्रभाव देखने को नहीं मिला। वर्ष 2020 हमें सीमित सुविधाओं में कार्य करने की सीख दे गया और वर्ष 2021 संस्थान को कई पुरस्कारों से विभूषित करके गया जिससे दूसरों की अपेक्षाएँ हमारे संस्थान से और भी बढ़ी है। अतः मैं आशा करता हूँ कि इस वर्ष हम सभी मिलकर और भी अधिक कार्य करें जिससे संस्थान सफलता की नई सीढ़ियाँ चढ़े।

अंत में, यह साल 2022 आप सभी के जीवन में अच्छे स्वास्थ्य व सफलता के साथ ढेरों खुशियाँ लेकर आये। एक बार फिर से आप सभी को नए साल की ढेरों शुभकामनाएँ।

नए वर्ष का स्वागत एक नए संकल्प के साथ,
धन्यवाद,

बिजे.एस.

(बसन्त कुमार दास)



गंगा मशाल यात्रा



गंगा मशाल यात्रा दिनांक 3 नवंबर 2021 को नई दिल्ली से शुभारंभ किया गया और यह 21 नवंबर 2021 को पश्चिम बंगाल के फरक्का में पहुँचा। तत्पश्चात यह मशाल दिनांक 23 नवंबर 2021 को मायापुर से होते हुए भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में आगमन हुआ। गंगा मशाल यात्रा को प्रादेशिक सेना की एक बटालियन गंगा टास्क फोर्स के सहयोग से देश के कोने-कोने में ले जाया गया। इस मशाल का उद्देश्य लोगों को गंगा नदी के संरक्षण और पुनरुद्धार कार्यक्रम से जोड़ना है। इस मशाल यात्रा से जनता को गंगा और भारत की अन्य नदियों के पुनरुद्धार के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम के साथ जुड़ने का संदेश देना है। मशाल यात्रा का नेतृत्व मेजर एल.एन. जोशी और उनकी टीम ने किया। मशाल को देश के पांच (5) राज्यों उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में घुमाया गया। यात्रा का समापन 25 नवंबर 2021 को पश्चिम बंगाल के बक्खाली में हुआ।

संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में दिनांक 23 नवंबर 2021 को गंगा मशाल के आगमन पर संस्थान के सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम का



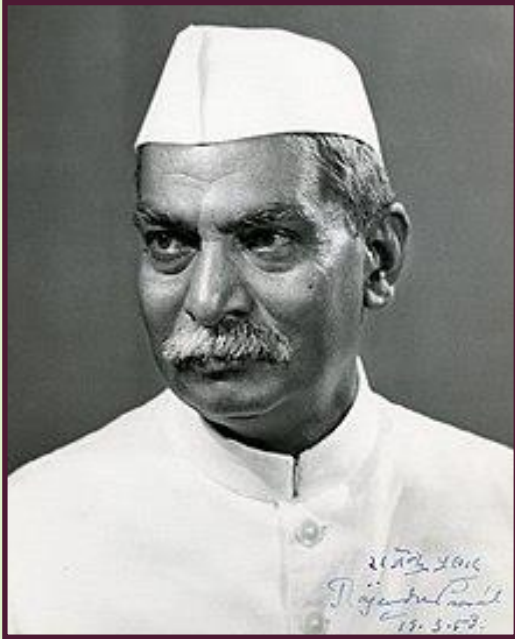
आयोजन किया गया कार्यक्रम की शुरुआत गंगा नदी गीत और दीप प्रज्वलित कर की गई। कार्यक्रम में संस्थान सदस्यों और आर्मी पब्लिक स्कूल, बैरकपुर के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद डॉ. संदीप बेहरा, सलाहकार, एनएमसीजी ने परिचयात्मक भाषण दिया जिसमें उन्होंने गंगा मशाल के उद्देश्यों पर जोर देते हुए ऋषिकेश (उत्तराखंड) से बक्खाली (पश्चिम बंगाल) तक गंगा मशाल यात्रा के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जनता को इस अभियान से जोड़ा जाना चाहिए और गंगा



के प्रदूषण के लिए केवल हमलोग ही जिम्मेदार हैं और हम सफाई कार्यक्रम को सफल बना सकते हैं, जल निकासी व्यवस्था में सुधार कर सकते हैं, जैविक खेती को प्रोत्साहित कर सकते हैं, मछुआरों को आजीविका सहायता प्रदान कर सकते हैं। मछलियों की प्रजातियों के संरक्षण से पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार किया जा सकता है। मेजर एल.एन. जोशी, गंगा टास्क फोर्स ने प्रोफेसर तारे, आईआईटी, कानपुर के एक श्लोक का हवाला देते हुए नदियों के संरक्षण के महत्व पर जोर दिया है कि हमारी पौराणिक कथाओं में भी 14 चीजों को नदी में न फेंकने के लिए प्रतिबंधित किया गया है जैसे कि अपशिष्ट जल, कचरा आदि। गंगा नदी की सफाई के लिए हमें व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी होगी। श्री प्रमोद कुमार, एनसीसी कैडेट ने इस विशेष दिन पर छात्रों के साथ प्रदर्शन करने का अवसर देने के लिए संस्थान के निदेशक को धन्यवाद दिया। डॉ. बी.पी. मोहंती, सहायक महानिदेशक (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने गंगा मशाल का स्वागत किया और गंगा टास्क फोर्स को इस महान कार्य के लिए बधाई दी। उन्होंने बताया कि यह मशाल जल शक्ति मंत्रालय, जल संसाधन मंत्रालय और गंगा नदी संरक्षण मंत्रालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय (आईसीएआर-सीआईएफआरआई) और गंगा टास्क फोर्स (रक्षा मंत्रालय) का संयुक्त उपक्रम है। उन्होंने रामायण और महाभारत से गंगा नदी के महत्व का हवाला दिया। डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी ने गंगा मशाल के महत्व पर जोर दिया और हॉल में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों को हार्दिक धन्यवाद दिया। उसके बाद, मेजर एल.एन. जोशी, गंगा टास्क फोर्स ने सभागार में उपस्थित सभी लोगों के साथ शपथ ली। संध्या काल में संस्थान टीम और मशाल यात्रा टीम भारतीय मेजर कार्प प्रजाति के गंगा आरती और रैचिंग कार्यक्रम के लिए गांधी घाट, बैरकपुर में एकत्रित हुई।



भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में कृषि शिक्षा दिवस-2021 का आयोजन



भारत के प्रथम राष्ट्रपति और भारत रत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी की जयंती के उपलक्ष्य में 03 दिसंबर, हर साल, आईसीएआर और उसके संस्थान, विश्वविद्यालय, केविके, कॉलेज और पूरे भारत में इस दिन को उत्साह से मनाते हैं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने 1884 में 03 दिसंबर को जन्म लिया, महात्मा गांधी जी के एक उत्साही अनुयायी, जो 1946 में भारत के पहले कृषि मंत्री थे और भारत के पहले राष्ट्रपति (1950-62) थे, जिन्होंने सबसे लंबे समय तक कार्यकाल की सेवा की थी। वह "आत्म-निर्भर भारत" के राष्ट्र निर्माता थे, जिसने कृषि के पुनर्गठन को एक नई ऊंचाई तक पहुंचाया। इस क्षेत्र के लिए उनके उत्कृष्ट योगदान को श्रद्धांजलि देने के लिए उन्हें 1962 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

कृषि शिक्षा दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य भारत में कृषि के विकास और उन्नति के लिए छात्रों, युवाओं को प्रेरित करना है; इस दिन को मनाने के लिए भारत सरकार, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा शुरू की गई परियोजना आर्य (ARYA)- बहुत उपयुक्त है (ARYA: Attracting & Retaining Youth in Agriculture)

आईसीटी के अनुप्रयोग ने शोध को काफी सहज कर दिया है, स्मार्ट क्लासेस के साथ प्रशिक्षण और विस्तारअधिक व्यावहारिक तरीके से अप्रशिक्षित लोगों तक पहुंचाया जा रहा है ,वेबिनार,मोबाइल ऐप, ई-कोर्स, ई-कंटेंट, ई-संसाधन, मल्टीमीडिया लैब, वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग, टेली-कॉन्फ्रेंसिंग के साथ ड्रोन-आधारित प्रौद्योगिकी के साथ कृषि शिक्षा को और अधिक विवेकपूर्ण तरीके से किसानों तक पहुंचाया जा रहा है।

युवा पीढ़ी को कृषि के विभिन्न पहलुओं पर आवश्यकता-आधारित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और तभी इस दिन का उद्देश्य पूरा होगा। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सीआईएफआरआई ने कृषि वैज्ञानिकों को उनकी कृषि पद्धतियों से उत्पन्न होने





वाली उनके दैनिक जीवन में उनके सामने आने वाली समस्याओं को हल करने में किसानों के साथ जुड़े रहने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों का आह्वान किया कि वे वर्तमान कृषि का हिस्सा बनने के लिए आगे आएँ और किसानों के साथ ज्ञान साझा करके जीविका प्राप्त करें और बदले में उन्हें तकनीकी उपकरणों से लैस आधुनिक कृषि पद्धतियों से अवगत कराएँ।

संस्थान के सभी विभागाध्यक्षों की टिप्पणियों ने मुजफ्फरपुर, बिहार से भाग लेने वाले प्रशिक्षु किसानों के साथ-साथ संस्थान के छात्रों, शोधार्थियों के बीच उत्साह पैदा करने की दिशा में कार्यक्रम को और अधिक प्रासंगिक बना दिया। स्थायी आजीविका के लिए कृषि शिक्षा दिवस मनाने की प्रासंगिकता पर एक प्रस्तुति डॉ ए के दास, संस्थान के प्रशिक्षण और विस्तार इकाई के प्रभारी पस्तुत किया और दर्शकों से बातचीत करके कार्यक्रम को और भी आकर्षित बनाया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।



भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 4 दिसंबर 2021 को कृषिरत महिला दिवस का आयोजन किया



कृषि क्षेत्र में महिलाओं के प्रयासों और योगदान को मान्यता देने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद हर वर्ष 4 दिसंबर को 'कृषिरत में महिला दिवस' के रूप में मनाता है। इस अवसर पर भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में एक विचार मंथन सत्र का आयोजन किया गया जिसमें अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के क्षेत्र में महिला वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों और यंग प्रोफेशनल के योगदान पर विस्तृत चर्चा की गई। इस विचार-मंथन सत्र में संस्थान में कार्यरत सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों और छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. सजीना ए एम, वैज्ञानिक के स्वागत भाषण के साथ किया गया। डॉ. सुमन कुमारी, वैज्ञानिक ने महिलाओं की भूमिका और योगदान के संबंध में नए विचार प्रस्तुत किए। सुश्री हेना चक्रवर्ती, यंग प्रोफेशनल-II और डॉ.

श्रेया भट्टाचार्य, प्रोफेशनल-II ने क्रमशः नमामि गंगे परियोजना और सजावटी मछली पालन में महिलाओं के योगदान पर विचार प्रस्तुत किए। सुश्री सुनीता प्रसाद, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने कृषि में लैंगिक समीकरण तथा महिलाओं की भागेदारी पर अपना विचार रखा। विचार मंथन सत्र की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक, डॉ. बि के दास ने किया तथा उन्होंने सभी महिला कर्मियों की अनुसंधान के साथ-साथ संस्थान निर्माण गतिविधियों में उनके प्रयास और





लगन की सराहना की। साथ ही, डॉ. दास ने महिला वैज्ञानिकों में नेतृत्व विकास पर जोर दिया। सिफरी हमेशा से समाजिक उत्थान के लिए मत्स्य पालन से जुड़ी महिला कर्मियों के लिए एक मंच प्रदान करता है जहां वे उन्मुक्त तौर पर अपने विचार साझा का सकें। कार्यक्रम का समापन सुश्री निरुपदा चानू, वैज्ञानिक के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुमेधा दास ने किया।



संस्थान में 5 दिसंबर, 2021 को विश्व मृदा दिवस का आयोजन

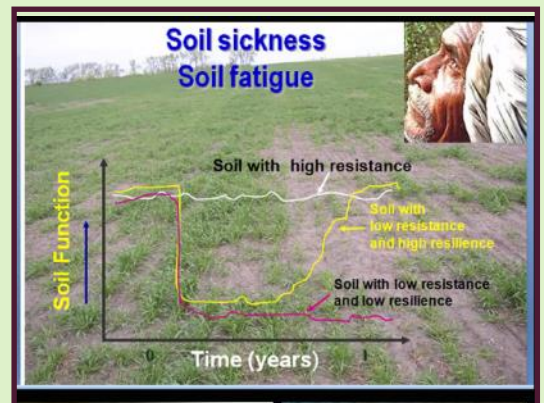


भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने दिनांक 5 दिसंबर 2021 को बैरकपुर मुख्यालय में 'विश्व मृदा दिवस-2021' का आयोजन ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से किया जिसमें कृषि उत्पादन और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए मिट्टी के स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो० पबित्र मणि, प्रख्यात मृदा वैज्ञानिक और विभागाध्यक्ष, कृषि रसायन विज्ञान और मृदा विज्ञान विभाग, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, (बीसीकेवी), मोहनपुर, नादिया, पश्चिम बंगाल उपस्थित थे।



संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिसंबर 2013 में दिनांक 5 दिसंबर को विश्व मृदा दिवस के रूप में नामित किया जो थाईलैंड के सम्राट एच.एम. किंग भूमिबोल अदुल्यादेज का जन्मदिन है और जिन्होंने आधिकारिक तौर पर इस आयोजन की मंजूरी दी थी। ग्लोबल सॉयल पार्टनरशिप ने विश्व मृदा दिवस -2021 को "हॉल्ट सेल सेलिनाइजेशन, बूस्टिंग सॉइल प्रोडक्टिविटी" विषय को समर्पित किया है। इस कार्यक्रम में देश के वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों, राज्यों के मत्स्य विभागों के

अधिकारियों, छात्रों, शोधार्थियों, किसानों, उद्यमियों सहित 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रो. मणि ने फसल और जल उत्पादकता बढ़ाने के लिए तटीय लवणीय क्षेत्र में मृदा स्वास्थ्य के पुनरुद्धार पर सशक्त प्रस्तुति दी। इसके पश्चात किसानों, छात्रों और वैज्ञानिकों के साथ पारस्परिक संवाद सत्र में महत्वपूर्ण मुद्दों, जैसे कृषि उत्पादन प्रणाली के संबंध में तटीय मिट्टी की समस्याएं आदि पर विचार मंथन किया। संस्थान के निदेशक, डॉ बि के दास ने





अपने उद्घाटन भाषण में वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में मृदा स्वास्थ्य के रखरखाव पर जोर दिया तथा यह कहा कि कृषि रसायनों और मृदा वैज्ञानिकों को राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा के लिए मिट्टी के पर्यावरण स्वास्थ्य को बनाए रखने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। आने वाले दिनों में अन्तर्स्थलीय खुला जल क्षेत्रों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रदान करना एक सराहनीय प्रयास होगा जिससे मात्स्यिकी संवर्धन द्वारा अधिक उत्पादकता प्राप्त किया जा सके।



सिफरी वैज्ञानिक तथा महिला स्वयंसेवी समूह के बीच पारस्परिक संवाद का आयोजन



भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने दिनांक 7 दिसंबर, 2021 को रथिंद्र कृषि विज्ञान केंद्र, श्रीनिकेतन, बीरभूम में वैज्ञानिक-महिला स्वयंसेवी समूह के बीच पारस्परिक संवाद का आयोजन किया। इस संवाद का आयोजन रथिंद्र कृषि विज्ञान केंद्र, विश्व भारती, शांतिनिकेतन के सहयोग से किया गया था जिसमें बीरभूम जिले के 16 स्वयंसेवी समूह से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय के कुल 152 लाभार्थियों ने भाग लिया। इस संवाद का उद्देश्य प्रतिभागियों को आजीविका और पोषण सुरक्षा के लिए अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के बारे में जागरूक करना है।



इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. बि के दास ने पोषण और आयवृद्धि हेतु अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के लाभ के साथ क्षेत्रीय स्तर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के योजनाओं के माध्यम से संचालित आजीविका सुधार कार्यक्रमों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने अन्तर्स्थलीय जल निकायों में मछलियों में होने वाले रोग संक्रमण तथा इसके प्रबंधन के बारे में भी चर्चा की। डॉ. एम. ए. हसन, प्रभागाध्यक्ष, एफआरएम; डॉ. ए. के. दास, प्रभारी, प्रशिक्षण एवं विस्तार कक्ष; डॉ. अपर्णा रॉय, नोडल



अधिकारी आदिवासी उप-योजना ने अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के विभिन्न घटकों के बारे में विस्तृत तौर पर बताया। कृषि विज्ञान केंद्र प्रमुख डॉ. सुब्रतो मंडल ने महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए आय के वैकल्पिक स्रोत के रूप में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के महत्व पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में महिला प्रतिभागियों ने सिफरी के सहयोग से लाभान्वित होने पर अपनी प्रतिक्रिया दी। इस क्रम में आदिवासी महिला सदस्य, सुकदी मारडी ने कहा कि उनके स्वयं सहायता समूह को संस्थान के विकसित तकनीकों तथा प्रदत्त आदानों से बहुत लाभ हुआ है। लाभार्थियों ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों के बारे में चर्चा की। इस अवसर पर आदिवासी उप-योजना तथा अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति समुदाय के लाभार्थियों की आजीविका वृद्धि के लिए मत्स्य बीज, मछली चारा, चूना जैसे मत्स्य विकास के लिए आदान वितरित किए गए।

संस्थान आदिवासी उप-योजना तथा अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत रथिंद्र कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से प्रदर्शन और जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करता रहा है। इस क्रम में दिनांक 7 दिसंबर, 2021 को दोपहर सत्र में आदिवासी महिला सदस्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ श्रीनिकेतन, बीरभूम के अशदुल्ला गांव में एक आदिवासी महिला स्वयंसेवी समूह, "चंदू रकाब" द्वारा प्रबंधित एक जल निकाय में प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया।



बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के मछुआरों के लिए संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रम



बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन 30 नवंबर, 2021 को संस्थान मुख्यालय में निदेशक डॉ. वि. के. दास, द्वारा किया गया। कार्यक्रम में कुल 31 मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन मुजफ्फरपुर, बिहार के मछुआरों और मछली किसानों की आवश्यकता के आधार पर किया गया क्योंकि उस जिले में बारहमासी और मौसमी तालाबों की विशाल श्रृंखला है, जिसमें गंगा बेसिन के मौन और चौर शामिल हैं, जिससे जिले को अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास के माध्यम से आजीविका में सुधार की पर्याप्त गुंजाइश मिलती है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में, संस्थान का उद्देश्य अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण में अंतर को पाटना है। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, निदेशक डॉ. वि.के. दास ने ग्रामीण भाग में गरीबी और कुपोषण को दूर करने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर मछली किसानों के कौशल विकास की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि उनकी आजीविका सुनिश्चित हो सके। मत्स्य पालन में उद्यमशीलता के अवसर जिनका बेहतर विपणन और व्यावसायिक कौशल के साथ उपयोग किया जा सकता है, उन्हें तैयार करने पर उन्होंने जोर दिया। उन्होंने प्रशिक्षुओं के साथ भी बातचीत की



और उन्हें अपनी शिक्षा को व्यवहार में लाने और अपने घर पर वापस जाने के बाद साथी मछुआरों के बीच प्रशिक्षण सत्रों से प्राप्त ज्ञान का प्रसार करने के लिए कहा। कार्यक्रम में चार दिनों के व्याख्यान के साथ-साथ प्रशिक्षण सत्र और पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि (ईकेडब्ल्यू), सजावटी मछली बाजार, कोलकाता, भाकृअनुप-सीफा फील्ड स्टेशन, कल्याणी, नैहाटी मछली बाजार और खमरगाछी और बालागढ़ में तीन दिनों के फील्ड एक्सपोजर दौरे शामिल थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर सत्र शामिल हैं जिसमें जल और मृदा रसायन, मछली का प्रेरित प्रजनन, मछली स्वास्थ्य



प्रबंधन, आर्द्रभूमि प्रबंधन, सजावटी मछली पालन, पिंजरे में मछली पालन, मछली फ्रीड तैयार करना, पिंजड़े के स्टॉक उत्पादन के लिए पुनर्चक्रण प्रणाली शामिल हैं। सजावटी मछली पालन इकाई, बायोप्लोक कार्यात्मक इकाई के साथ-साथ आरएएस प्रणाली पर आंतरिक क्षेत्र के दौरे ने प्रशिक्षु मत्स्य किसानों के बीच उत्साह पैदा किया। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञान परीक्षण द्वारा प्रशिक्षुओं की आवश्यकता के आकलन के साथ की गई थी और संस्थान में भविष्य में होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार के लिए उनसे फीडबैक के संग्रह के साथ समाप्त किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ए.के. दास, प्रभारी प्रशिक्षण एवं विस्तार कक्ष द्वारा किया गया था और सह समन्वय डॉ. प्रज्ञा ऋतंभरा स्वैन द्वारा किया गया था।



जलशक्ति और जनजातीय मामलों के राज्य मंत्री श्री विशेश्वर टुडू ने सिफरी पेन कल्चर सह जलाशय मात्स्यिकी संवर्धन कार्यक्रम का उद्घाटन किया



जलशक्ति और जनजातीय मामलों के राज्य मंत्री श्री विशेश्वर टुडू ने सिफरी पेन कल्चर सह जलाशय मात्स्यिकी संवर्धन कार्यक्रम का उद्घाटन किया श्री विशेश्वर टुडू, माननीय राज्य मंत्री, जलशक्ति और जनजातीय मामला, भारत सरकार ने 11 नवंबर 2021 को ओडिशा के मयूरभंज जिले के बालीडीहा में सिफरी पेन कल्चर प्रदर्शन सह जलाशय मत्स्य पालन वृद्धि कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

अपने स्वागत भाषण में संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने माननीय मंत्री का स्वागत किया और उन्हें ओडिशा में संस्थान द्वारा की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बालीडीहा बांध के मछुआरों से जलाशय मात्स्यिकी वृद्धि कार्यक्रम की सफलता के लिए एक साथ काम करने का अनुरोध किया।

माननीय मंत्री जी ने अपने भाषण में जलाशय मात्स्यिकी विकास कार्यक्रम से स्थानीय समुदाय को होने वाले लाभों पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ओडिशा सरकार के मत्स्य विभाग और मछुआरों को ओडिशा में जलाशयों के समग्र विकास के लिए संस्थान के साथ हाथ मिलाना चाहिए और आदिवासी समुदाय के सामाजिक विकास की दिशा में संस्थान के प्रयासों की सराहना की।

श्री सुब्रत दास, जिला मत्स्य अधिकारी, मयूरभंज जिला ने अपने संबोधन में मत्स्य विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी।

संस्थान एससीएसपी/एसटीसी कार्यक्रम के माध्यम से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के उन्नयन के लिए लगातार काम कर रहा है। इन कार्यक्रमों के तहत संस्थान ने मयूरभंज, ओडिशा के अन्तर्स्थलीय जल निकायों से मछली उत्पादन को बढ़ाने के उद्देश्य से एसटीसी कार्यक्रम के तहत बालीडीहा बांध में काम शुरू किया है। एक सिफरी पेन एचडीपीई (0.1 हेक्टेयर) जलाशय में स्थापित किया गया था और 30,000 भारतीय प्रमुख कार्प के अंगुलिमीन स्टॉक किया गया था। पेन में मछलियों को नियमित रूप से खिलाने के लिए लाभार्थियों को सिफरी केजरो फीड भी प्रदान किया गया। कार्यक्रम में कई स्थानीय स्वयं सेवा समूह (एनजीओ), स्थानीय



सामाजिक कार्यकर्ता भी शामिल हुए। कार्यक्रम में लगभग 250 स्थानीय लोगों के साथ-साथ मछुआरे भी शामिल हुए और इस कार्यक्रम का आयोजन कोविड दिशानिर्देशों का पालन करते हुए किया गया। कार्यक्रम का संचालन वैज्ञानिक डॉ. एच. एस. स्वैन एवं श्री एम.एच. रामटेके, एवं तकनीकी सहायक श्री. के. मोडल, ने बालीडीहा सुरक्षा मंच के सहयोग से किया।



जलीय जैव विविधता की खोज और संरक्षण: एक नया दृष्टिकोण



संरक्षित जल निकायों में जलीय जैव विविधता पर आधारभूत जानकारी प्राप्त करने के लिए बिहार के दरभंगा जिले के कुशेश्वर पक्षी अभयारण्य के आर्द्रभूमि में एक सर्वेक्षण किया गया था। कोसी-गंडक बेसिन के अंतर्गत कुशेश्वर चौर क्षेत्र मत्स्य पालन और जैव विविधता की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है और इसे 1994 में सरकार द्वारा वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत पक्षी अभयारण्य के रूप में अधिसूचित किया गया है। यह चौर वर्षा आधारित आर्द्रभूमि है और कमला, बालन, बागमती और करेह जैसी नदियों के नेटवर्क से बहने वाले पानी का प्रमुख स्रोत हैं। कुशेश्वर चौर अत्यधिक विविध है और 14 अत्यधिक आबादी वाले गांवों से घिरा हुआ है। संरक्षित जल निकाय कई पारिस्थितिक सेवाएं प्रदान करता है और एक समृद्ध जलीय विविधता प्रदान करता है। शोध दल ने चार महत्वपूर्ण चौरों-महरीला चौर (उत्तर), नरेल चौर

(पूर्व), बरारी चौर (पश्चिम) और मनोरिया चौर (दक्षिण) में विस्तृत इचिथोलॉजिकल सर्वेक्षण किया। आर्द्रभूमि प्रणाली द्वारा प्रदान की जाने वाली पारिस्थितिक सेवाओं को मत्स्य पालन, कृषि, पक्षी संरक्षण, ईंधन और चारा स्रोत, खाद्य संसाधन जैसे मैक्रोफाइट कंद और बीज आदि सहित प्रलेखित किया गया था। कुल मिलाकर 61 मछली प्रजातियां (5 प्रजातियां कम होती हुई, 3 प्रजातियां खतरे में हैं) और आईयूसीएन (IUCN) रेड डेटा सूची के आधार पर 1 प्रजाति (क्लेरियस मगर लुप्तप्राय श्रेणियां), 2 झींगा प्रजातियां और 2 केकड़े प्रजातियां दर्ज की गईं। कैप्चर लैंडिंग में प्रमुख बड़े आकार की मछलियां *वैलागो एट्ट*, *चन्ना स्ट्रिएटस*,





मास्टेसेम्बेलस आर्मेडस, गिबेलियन कैटला, लेबियो रोहिता, सिरिनस मृगला, सिस्टोमस सरना आदि थीं। अधिकांश प्रचुर मात्रा में देशी प्रजातियाँ छोटे आकार की थीं (अर्थात् अनाबास टेस्टुडीनस, मैक्रोग्राथस एसपीपी, पुंटियस एसपीपी, पेथिया एसपीपी, चंदा नामा, स्यूडंबसिस रंगा, साल्मोफैसिया एसपीपी, एंक्लीफेरीनगोडन एसपी, रासबोरा एसपीपी, आदि) मछलियां, और उनमें से कई सजावटी मूल्य के है। एफएडी की अवधारणा पर आधारित एक पारंपरिक मछली पकड़ने की प्रथा प्रचलित थी जिसे 'जिंग' मछली पकड़ना कहा जाता था। चौर में जल संचयन की क्षमता कम हो गई और बाढ़ की घटनाओं में वृद्धि हुई, विभिन्न हितधारकों जैसे मछली पकड़ने और गैर-मछली पकड़ने वाले समुदायों के बीच संघर्ष, अंधाधुंध और विनाशकारी मछली पकड़ने की प्रथा, पक्षियों के देखे जाने में कमी, आदि मुद्दे पाए गए। आजीविका समर्थन और मछली और पक्षियों के संरक्षण के लिए इन महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि संसाधनों की विशाल क्षमता पर विचार करते हुए एक उचित संरक्षण प्रबंधन योजना को लागू करने, और जलीय संसाधनों के संरक्षण के महत्व पर जागरूकता की बहुत आवश्यकता महसूस की गई। संरक्षित क्षेत्र परियोजना के तहत यह कार्यक्रम डॉ. सजीना ए. एम, डॉ. सुमन कुमारी और श्री वाई अली द्वारा संचालित किया गया था।



अनुसूचित जाति उपयोजना कार्यक्रम के तहत डुमनीडाहा बील, मुर्शिदाबाद में "पेन कल्चर प्रदर्शन" पर एक कार्यक्रम



भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत धन्यगंगा कृषि विज्ञान केंद्र, आरकेएमए, सरगाछी के सहयोग से पेन कल्चर के माध्यम से मछली उत्पादन में वृद्धि के लिए वर्ष 2020-21 के दौरान पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद के डुमनीडाहा बील में काम शुरू किया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में डुमनीडाहा के मछुआरों को आर्द्रभूमि के लिए पेन में मछली के बीज के उत्पादन और पालन के लिए प्रेरित किया गया। जल निकाय का प्रबंधन एंडिरॉन मछुआरे सहकारी समिति द्वारा किया गया। समिति में 94 मछुआरे शामिल हैं और वे सभी अनुसूचित जाति समुदाय के हैं। संस्थान से तकनीकी सहायता के लिए बील के एंडिरॉन मछुआरे पीएफसीएस और स्थानीय सहायता के लिए धन्यगंगा कृषि विज्ञान केंद्र के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किया



गया हैं। 1 दिसंबर 2021 को, संस्थान के अनुसूचित जाति उपयोजना कार्यक्रम के तकनीकी मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता के तहत डुमनीडाहा बील के पेन में 200 किलोग्राम अंगुलिमीन का स्टॉक किया गया। मछुआरा समिति को एक एफआरपी नाव, दो एफआरपी कोरकल भी दिया गया। 2019-20 के दौरान भी इसी तरह की गतिविधि का प्रदर्शन किया गया जिसमें मछुआरों को अत्यधिक लाभ हुआ। निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन किया गया। अनुसूचित जाति उपयोजना कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. पी. के. परिदा ने धनगंगा केवीके के श्री उदय नारायण दास, एसएमएस (मत्स्य विज्ञान) के सहयोग से कार्यक्रम का समन्वय किया।

भाकृअनुप –केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित 'भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के खुले जल मत्स्य पालन वृद्धि' पर क्षेत्रीय कार्यशाला



संस्थान ने 20 दिसंबर 2021 को वर्चुअल मोड में 'भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के खुले जल मत्स्य पालन वृद्धि' पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य राज्य के मत्स्य विभाग को खुले जल मत्स्य प्रबंधन के बारे में अवगत कराना था। संस्थान द्वारा विकसित दिशानिर्देश/प्रौद्योगिकियां; अनुसंधान सहायता आवश्यकताओं को समझने और सहयोगी कार्यक्रमों के बारे में उन्हें बताना था।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रभारी डॉ. बी.के. भट्टाचार्य और एनईएच परियोजना के पीआई ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और कार्यशाला की पृष्ठभूमि के बारे में बताया। डॉ. बि.के. दास, निदेशक और एनईएच परियोजना के समन्वयक ने अपने संबोधन में भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में संस्थान द्वारा किए गए हस्तक्षेपों और गतिविधियों के बारे में विस्तार से चर्चा की। प्रोफेसर रतन साहा, डीन, फिशरीज कॉलेज, सीएयू लेम्बुचेरा और प्रो. बिनोद कलिता, डीन, फिशरीज कॉलेज, एएयू राहा ने क्षेत्र में उनकी गतिविधियों और अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन की

भविष्य की जरूरतों के बारे में जानकारी दी।

पूर्वोत्तर राज्यों के मत्स्य पालन निदेशक और असम के उनके प्रतिनिधि (डॉ. भगवान कलिता, डॉ. आरसी बर्मन, श्री अनुपम शर्मा), अरुणाचल प्रदेश (श्री एन. पुसांग, डॉ. एनसी टोक), मणिपुर (श्री बालकृष्ण), मेघालय (श्री खारबुखी और डेविड), मिजोरम (श्री जोमिंगथांगा), नागालैंड (श्री नीतू कुओत्सु), सिक्किम (श्री जसवंत एन) और त्रिपुरा (डॉ समीर मल्ला) ने अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन की स्थिति और संस्थान से अपेक्षाओं की व्याख्या की। श्री पी. बरकतकी, एसीएस, प्रबंध निदेशक, एडीएफसी लिमिटेड ने संस्थान से



बील मात्स्यिकी प्रबंधन पर मछुआरों की क्षमता निर्माण का आग्रह किया। इस क्षेत्रीय कार्यशाला में 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया। चर्चा के दौरान कुछ प्रमुख बिन्दु थे: अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के सतत उपयोग और प्रबंधन के लिए प्रशिक्षित जनशक्ति की कमी, पूर्वोत्तर राज्यों के अन्तर्स्थलीय मत्स्य संसाधनों के लिए अद्यतन डेटाबेस की कमी, उपयुक्त प्रजातियां, इष्टतम स्टॉकिंग घनत्व और मछलियों का घेरे में पालन और अन्य मानदंड, बील और जलाशयों में, नदी के मत्स्य पालन में सुधार के दिशा-निर्देशों की कमी और नदियों में मछली पालन और खुले जल निकायों में मछलियों का खतरा आदि। डॉ. बि.के. दास, निदेशक ने हर संभव अनुसंधान, विकास और विस्तार सहायता का आश्वासन दिया।

कार्यशाला के प्रधान वैज्ञानिक एवं समन्वयक डॉ. अरुण पंडित ने सभी प्रतिभागियों को उनके मूल्यवान सुझावों के लिए धन्यवाद दिया। डॉ. दीपेश देबनाथ, वरिष्ठ वैज्ञानिक और कार्यशाला के समन्वयक ने संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी से कार्यशाला के आयोजन में सहायता की।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र कोच्चि द्वारा एलमकुत्रापुझा में जलवायु संबंधित मत्स्य पालन की एक पहल

संस्थान के कोच्चि केंद्र ने 9 दिसंबर 2021 को एनआईसीआरए के तहत उठाए गए जलवायु संबंधित मत्स्य पालन कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में एलमकुत्रापुझा में वेम्बनाड झील से जुड़े कल्चर आधारित मत्स्य पालन प्रतिष्ठानों में पर्ल स्पॉट के 6000 बीजों का स्टॉक किया गया। स्टॉकिंग कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सिनोज कुमार, उपाध्यक्ष, एञ्जुपुत्रा ग्राम पंचायत और श्री जाँय के.जे, वार्ड सदस्य की उपस्थिति में किया गया



और इसमें क्षेत्र के मछली किसानों ने भी भाग लिया इस कार्यक्रम में आर्द्रभूमि से जुड़े किसानों को निरंतर आजीविका के लिए स्टॉकिंग और उत्पादन के रणनीतियों की परिकल्पना की गई। यह रणनीति एक साल के लिए जलवायु परिवर्तन के परिदृश्य में पर्लस्पॉट के प्रजनन और आहार विविधताओं का आकलन सुनिश्चित करती है। आंशिक पालन अप्रैल 2022 तक निर्धारित है, जिससे लगभग 1.5 टन उपज 4.5 लाख

की कमाई होगी। कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए डॉ. थंकम थेरसा पॉल, वैज्ञानिक, एल्बिन अल्बर्ट सी, वाईपी और श्री पी.वी.शाजिल (तकनीशियन) ने आवश्यक व्यवस्था की।



अनुसूचित जाति उपयोजना कार्यक्रम के तहत गायत्री जलाशय, कर्नाटक में संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर द्वारा संवेदीकरण कार्यक्रम और मछली पकड़ने के उपकरणों का वितरण



संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर ने 22 दिसंबर 2021 को कर्नाटक के चित्रदुर्ग में गायत्री जलाशय में जलाशयों में मत्स्य पालन विकास पर एक संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया और अनुसूचित जाति समुदाय के दस सक्रिय मछुआरों को फाइबरग्लास फिशिंग कोराकल वितरित किए, अनुसूचित जाति उप योजना (एससी-एसपी) कार्यक्रम के तहत । प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी डॉ. प्रीता पणिक्कर ने राज्य के अधिकारियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और केंद्र की गतिविधियों के बारे में बताया और मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए केंद्र द्वारा शुरू की गई एससी-सब योजना के बारे में मछुआरों को अवगत कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जे उमेशा, मत्स्य पालन के संयुक्त निदेशक, शिवमोग्गा, कर्नाटक ने की, जिन्होंने अनुसूचित जाति के मछुआरों के आजीविका विकास के लिए प्रदान किए गए सहायता के लिए संस्थान को धन्यवाद दिया और निरंतर समर्थन के लिए अनुरोध किया। श्रीनिवास डी.एस. कर्नाटक के मात्स्यिकी विभाग के संयुक्त निदेशक ने भी इस अवसर पर बात की। संवेदीकरण कार्यक्रम में गायत्री जलाशय और वनिवलासागर मछुआरा सहकारी समिति, चित्रदुर्ग के 45 सक्रिय मछुआरों ने भाग लिया। इसके अलावा, कार्यक्रम में मत्स्य विकास और प्रबंधन, जलाशय शिल्प और गियर के विकास, नीतियों, महिला सशक्तिकरण आदि जैसे विभिन्न पहलुओं पर चर्चा भी शामिल थी। मछुआरों ने सक्रिय रूप से बातचीत की और विकास गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. विजयकुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया और संस्थान के निदेशक डॉ. वि. के. दास को उनकी प्रेरणा और समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया और मत्स्य विभाग, कर्नाटक सरकार द्वारा प्रदान की गई सहायता की भी सराहना की। डॉ. प्रीता पणिक्कर, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभारी , डॉ. अजाय साहा, वैज्ञानिक और डॉ. विजयकुमार एम.ई., क्षेत्रीय केंद्र के तकनीकी अधिकारी द्वारा सफलतापूर्वक यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।



चरण बील, असम में "एन्डोक्राइन दिसरापटिंग केमिकल (ईडीसी) और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन" पर जागरूकता कार्यक्रम



"एन्डोक्राइन दिसरापटिंग केमिकल (ईडीसी) और मछली स्वास्थ्य प्रबंधन" पर एक जागरूकता कार्यक्रम, MEAN: Measuring Endocrine Disrupting Chemicals and Aquatic Diagnostics through bio-sensory network with a special reference to North East India" परियोजना के तहत, चरण बील, मोरीगांव, असम में 23-12-2021 को संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी और सी-डैक, कोलकाता द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। यह परियोजना इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY), भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित है। इस कार्यक्रम में असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड, (एएफडीसी), गुवाहाटी के सहयोग से चरण बील के 60 मछुआरों ने भाग लिया। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के वैज्ञानिक डॉ. एस.सी.एस. दास ने मछुआरों को ईडीसी के विषाक्त प्रभाव और सतत बील मत्स्य विकास के लिए परियोजना के महत्व के बारे में बताया। डॉ. एस. मुखर्जी, परियोजना अभियंता, सी-डैक, कोलकाता ने स्थायी जलीय पर्यावरण प्रबंधन के लिए जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में ईडीसी का पता लगाने के लिए जैव-संवेदी प्रणालियों के महत्व का वर्णन किया। इस कार्यक्रम में संस्थान मुख्यालय के वैज्ञानिक डॉ. पी. के. परिदा ने बील में भंडारण सामग्री के रूप में मछली के बीजों को इन-सीटू पालन करने के लिए पेन कल्चर के महत्व पर जोर दिया और मछली रोग प्रबंधन के लिए एंटीबायोटिक दवाओं के जिम्मेदार उपयोग के बारे में भी बताया। वैज्ञानिक डॉ. ध्रुवा ज्योति सरकार ने बीलों में प्रदूषकों का पता लगाने के लिए पॉइंट ऑफ केयर बायोसेंसिंग सिस्टम के महत्व पर प्रकाश डाला और अन्तर्स्थलीय जल निकायों से अधिकतम मछली उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल गुणवत्ता मानकों के पहलुओं के बारे में जानकारी दी। श्री जे. पी. सैकिया, जेई, एएफडीसी ने भी समग्र बील मत्स्य विकास के लिए जल संसाधनों और उनके सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं के महत्व पर जोर दिया।

जागरूकता कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए एएफडीसी लिमिटेड के स्टाफ सदस्यों ने सहायता की। परियोजना के तहत ईडीसी का पता लगाने के लिए विकसित बायोसेंसर का प्रदर्शन श्री के. घोष, श्री एस. भट्टाचार्य, श्री आर. बनर्जी, श्री कौशिक दास, एमईएएन परियोजना के शोधार्थियों द्वारा किया गया। समग्र कार्यक्रम का समन्वय संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के.दास के मार्गदर्शन में डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी और डॉ. बी. के. बेहरा, प्रधान वैज्ञानिक और प्रभागाध्यक्ष द्वारा किया



“उमियाम जलाशय, मेघालय में केज कल्चर” पर संवादात्मक कार्यशाला



भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्देशीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा 'उमियाम जलाशय, मेघालय में केज कल्चर' पर एक संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए भाकृअनुप उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, उमियम के सहयोग से उमियम, मेघालय के उमनिउह ख्वान गांव में 21.12.2021 को किया गया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्देशीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और डॉ. वी. के. मिश्रा, निदेशक, भाकृअनुप उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, उमियम के समग्र मार्गदर्शन में किया गया : एनईएचआर, उमियाम के लिए आईसीएआर आरसी और डॉ. बीके भट्टाचार्य, प्रमुख (कार्यवाहक), भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्देशीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के गुवाहाटी के साथ-साथ डॉ. एस. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक, पशु और मत्स्य विज्ञान विभाग, भाकृअनुप उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर द्वारा समन्वयित किया गया। भाकृअनुप के दोनों संस्थानों के वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मी अर्थात् डॉ. प्रणब दास, डॉ. एस. बोरा, श्री ए.के. यादव, डॉ. डी.के. मीणा, श्री टी. तायंग, सुश्री पीतांबरी देवी, (वैज्ञानिक), श्री अलकेश दास (टीओ) और श्री प्रशांत महंत (एसटीए) ने कार्यक्रम में संसाधन व्यक्तियों के रूप में काम किया। कार्यक्रम में री-भोई किसान संघ के तहत इलाके के 55 आदिवासी किसानों (25 महिलाओं सहित) ने भाग लिया। संवादात्मक कार्यक्रम में स्थानीय मीडिया के प्रतिनिधि भी मौजूद हैं।

श्री डी. माज़ाओ ने कार्यक्रम के लिए मेहमानों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और सभी महिला समूह के नेतृत्व में स्थानीय समुदाय के लाभ के लिए जलाशय में पिंजरा संस्कृति पर पहल के लिए दोनों भाकृअनुप संस्थानों को धन्यवाद दिया। डॉ. एस. के. दास ने दिन भर चलने वाले कार्यक्रम का उद्देश्य समझाया। उन्होंने प्रतिभागियों को बताया कि मेघालय के उमियाम जलाशय में पिंजरा पालन पहली बार 2019 के दौरान भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्देशीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा एनईएचआर, उमियाम और री-भोई किसान संघ के लिए भाकृअनुप उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर के सहयोग से शुरू किया गया था। उन्होंने कहा कि यह डॉ. जे. के. जेना, डीडीजी (मात्स्यिकी विज्ञान), भाकृअनुप, नई दिल्ली के मार्गदर्शन और डॉ. बी. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर की पहल के कारण संभव हुआ। डॉ. एस. हजारीका, प्रधान वैज्ञानिक और नोडल अधिकारी, टीएसपी, एनईएचआर के लिए आईसीएआर आरसी, उमियम ने आदिवासी समुदायों की आजीविका में सुधार के लिए एनईएच क्षेत्र में कॉम्प्लेक्स द्वारा शुरू की गई प्रमुख गतिविधियों को रेखांकित किया। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने निदेशक, भाकृअनुप-सीआईएफआरआई को सीआईएफआरआई-जीआई पिंजरा (6 नंबर) को मंजूरी देने और उमियम जलाशय में पिंजरा पालन शुरू करने के लिए सीआईएफआरआई-केजग्री फीड प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने



उल्लेख किया कि दोनों भाकृअनुप संस्थानों ने आदिवासी समुदायों के उत्थान के लिए मिलकर काम किया। उन्होंने कहा कि भारत के विभिन्न राज्यों में जलाशयों में पिंजरा पालन बड़े पैमाने पर भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्देशीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा तकनीकी बैक-स्टॉपिंग और पी.एम.एम.एस.वाई. कार्यक्रमों के तहत वित्तीय सहायता के माध्यम से हो रहा है। उन्होंने महिलाओं के नेतृत्व वाले स्थानीय समुदायों से परियोजना अवधि के बाद भी सहयोगी पिंजरा संस्कृति को सफल बनाने के लिए अत्यधिक रुचि लेने का आग्रह किया ताकि भविष्य में इसी तरह की सरकारी सहायता प्राप्त हो सके। इस अवसर पर, विभिन्न हितधारकों के लाभ के लिए "मेघालय में खुले पानी की मात्स्यिकी का प्रबंधन: भाकृअनुप-सीआईएफआरआई हस्तक्षेप" पर एक पत्रक जारी किया गया। कुल 9000 नग. जलाशय में स्थापित पिंजरों में अंगुलिकाओ को छोड़ दिया गया और पिंजड़े की खेती में उपयोग के लिए लाभार्थियों को चार टन CIFRI-CAGEGROW फ्रीड प्रदान किया गया। श्री ब्राइटस्टार ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव रखा। उन्होंने लगातार तीसरे वर्ष उमियाम जलाशय में पिंजरा पालन को लागू करने के लिए दोनों आईसीएआर संस्थानों को धन्यवाद दिया और समूह के सदस्यों से इसकी सफलता के लिए शोधकर्ताओं के तकनीकी मार्गदर्शन के अनुसार ईमानदारी से काम करने का आग्रह किया।

तकनीकी सत्र के दौरान, डॉ. प्रणव दास ने उमियाम जलाशय में केज में खेती के पिछले परीक्षणों के निष्कर्षों सहित खुले पानी के लिए केज कल्चर तकनीक पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी। दोनों संस्थानों के संसाधन व्यक्तियों ने प्रतिभागियों के साथ पिंजड़े की खेती के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की, जिसमें चारा और स्वास्थ्य प्रबंधन और अर्थशास्त्र शामिल हैं।



भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा संरक्षण कार्यक्रम के तहत संरक्षित क्षेत्र के जल क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया



पारिस्थितिक आवासों के साथ जलीय जैव विविधता की स्थिति जानने के लिए, संस्थान की एक टीम ने हाल ही में रांची (छोटा नागपुर प्लाटो) के आसपास चयनित जलप्रपात क्षेत्र का दौरा किया, जो संरक्षित क्षेत्रों के अंतर्गत आते हैं। प्रारंभिक सर्वेक्षण के लिए कुल चार जलप्रपात जैसे दसम जलप्रपात, हुंडरू जलप्रपात, जोन्हा जलप्रपात और पंचगाघ जलप्रपात का चयन किया गया।

दशम जलप्रपात, दशम घाघ (23.143358 उत्तर, 85.46644 पूर्व) के नाम से भी जाना जाता है, जो रांची जिले में 44 मीटर





ऊंचाई पर स्थित है। दशम जलप्रपात सुवर्णरेखा नदी की सहायक नदी कांची नदी के पार एक प्राकृतिक झरना है। हुंडरू जलप्रपात (23.4500 उत्तर, 85.6500 पूर्व) रांची जिले में स्थित, 98 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और सुवर्णरेखा नदी से मिल जाता है। जोन्हा जलप्रपात (23.2030 उत्तर, 85.3630 पूर्व) जिसे गौतमधारा जलप्रपात भी कहा जाता है, रांची जिले में 43 मीटर ऊंचाई पर स्थित है। यह एक लटकती हुई घाटी में स्थित है, और रारू नदी से इसकी उत्पत्ति होती है। पंचगघ जलप्रपात (22.5641 उत्तर, 85.1517 पूर्व) खूंटी जिले में है और बनई नदी की धाराओं में से एक है।

सर्वेक्षण के दौरान झारखंड के रांची और खूंटी जिले के चार चयनित झरनों से कुल 27 फिनफिश प्रजातियों को दर्ज किया गया था। प्रजाति पोबो कैटफिश, ओम्पोक पाबो (हैमिल्टन, 1822), को अध्ययन के दौरान खतरे की कगार पर (एनटी) देखा गया। अध्ययन किए गए झरनों (दसम, हुंडरू, जोन्हा और पंचगाग) में जीवित स्थिति में जीनस गर्गा (गर्गा लमटा, जी. गोटीला, गर्गा एस. पीपी) के बाद बाबर्स (पुंटियस कोंचोनियस, पेथिया टिक्टो), और मूरल्स (चन्ना पंकटेस, चन्ना गचुआ) की महत्वपूर्ण उपलब्धता ने स्वदेशी नदी मछली के ब्रूडर का उपयोग करके सजावटी मत्स्य पालन के विकास की संभावना की ओर इंगित किया।

झारखंड के रांची और खूंटी जिलों के झरनों (दसम, हुंडरू, जोन्हा और पंचगाग) में कई देशी मछलियों (सहज जलीय आवास) की उपलब्धता और किसी भी विदेशी मछलियों की अनुपस्थिति ने नदी के उन हिस्सों को अप्रभावित नदी के रूप में दर्शाया और उनके उपयोग करने की संभावना का संकेत दिया। मछली की प्रजातियों के अलावा, फाइटोप्लांकटन की 22 प्रजातियां और जूप्लवक की 2 प्रजातियां भी दर्ज की गईं। संरक्षित क्षेत्रों के तहत जलीय जैव विविधता का दस्तावेजीकरण उनके संबंधित पारिस्थितिक क्षेत्रों के साथ चल रहे परिवर्तन परिदृश्य में उनके संबंधित आवासों के बारे में जानने के लिए यह एक पूर्वापेक्षा है। इस तरह का अध्ययन न केवल जैव विविधता पहलुओं को मजबूत करता है, बल्कि स्थानीय लोगों को इसके महत्व के बारे में भी जागरूक करता है, और ऐसे संरक्षित क्षेत्रों को कैसे संरक्षित किया जाए यह भी उन्हें सिखाता है। सर्वेक्षण का नेतृत्व डॉ. रंजन कुमार मन्ना, डॉ. दिबाकर भक्त, और श्री आर.सी. मंडी ने संरक्षित क्षेत्र परियोजना के तहत संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास के मार्गदर्शन में किया।

संस्थान में एनएफडीबी प्रायोजित "अन्तर्स्थलीय खुले पानी में केज कल्चर" पर व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित



एनक्लोजर कल्चर सिस्टम में संसाधनों की विशालता के कारण भारतीय जलाशयों (3.51 मिलियन हेक्टेयर) और आर्द्रभूमि (0.5 मिलियन हेक्टेयर) में मछली उत्पादन को बढ़ाने की काफी क्षमता है। संस्थान ने अन्तर्स्थलीय खुले पानी के लिए केज प्रौद्योगिकी का मानकीकरण और प्रदर्शन किया है, जिससे देश के 16 से अधिक राज्यों के सरकारों ने विभिन्न योजनाओं के माध्यम से 'मिशन मोड' के तौर पर व्यापक रूप से अपनाया है। केज का उपयोग (सीटू में) मछली के अंगुलिमीनों के साथ-साथ टेबल फिश के उत्पादन, भूमि आधारित खेती पर निर्भरता को कम करने के अलावा प्रति यूनिट मछली उत्पादकता और जलाशयों और आर्द्रभूमि से उत्पादन में सुधार के लिए किया जा सकता है। हालांकि



हितधारकों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए और इस तकनीक को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए प्रशिक्षित जनता की कमी है। इस संदर्भ में, संस्थान द्वारा एनएफडीबी प्रायोजित 15-17 दिसंबर, 2021 के दौरान "अन्तर्स्थलीय खुले पानी में (मीठे पानी) केज कल्चर पर मछुआरों की क्षमता निर्माण के लिए प्रशिक्षण" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने प्रशिक्षुओं को किसानों की आय दोगुनी करने के संदर्भ में भारत में केज में मत्स्य पालन से



संबंधित स्थिति, क्षमता और मुद्दों पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण अवधि का उपयोग ज्ञान और कौशल को इकट्ठा करने के अलावा वास्तविक हितधारकों तक प्रसारित करना चाहिए- ऐसा उन्होंने आग्रह किया। डॉ. एम.ए. हसन, प्रमुख, फेम डिवीजन और डॉ. ए.के. दास, प्रभारी, प्रशिक्षण एवं विस्तार कक्ष ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं का स्वागत किया, जिसमें पश्चिम बंगाल के मत्स्य पालन क्षेत्र में काम करने वाले किसानों, उद्यमियों, युवाओं सहित 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षुओं को पिंजड़े की खेती के विभिन्न पहलुओं पर आंतरिक व्याख्याओं के अलावा माईथॉन जलाशय झारखंड में केज कल्चर के ऑन-फील्ड प्रदर्शन से अवगत कराया गया। समापन कार्यक्रम पर अपना



वक्तव्य देते हुए, श्री श्रीकांत महतो जी, माननीय एमएसएमई मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार, ने प्रशिक्षुओं को अपने भविष्य के प्रयास में कार्यक्रम के दौरान प्राप्त ज्ञान और कौशल का उपयोग करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। प्रशिक्षण कार्यक्रम डॉ. एम. ए. हसन, प्रमुख, फेम डिवीजन और डॉ. ए. के. दास, प्रभारी, प्रशिक्षण एवं विस्तार कक्ष द्वारा अच्छी तरह से समन्वयित किया गया।

सेवानिवृत्ति

डा एस दामराय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, सिफरी का क्षेत्रीय अनुसंधान स्टेशन, कोलकाता

डा. एस दामराय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, सिफरी का क्षेत्रीय अनुसंधान स्टेशन, कोलकाता के तौर पर दिनांक 31 दिसंबर 2021 को संस्थान की सेवा से अवकाश प्राप्त किया। डा. एस दामराय ने अपने सेवाकाल का शुभारंभ एक वैज्ञानिक के तौर पर वर्ष 1989 में किया।



अपने सेवाकाल के दौरान अपने उत्कृष्ट कार्यों के बाल पर उन्हें पदोन्नति और पुरस्कार मिले हैं। उनकी पदोन्नति को इस प्रकार से रखा जा सकता है : वर्ष 1997 – वैज्ञानिक (सीनियर स्केल); वर्ष 1999 – वरिष्ठ वैज्ञानिक; वर्ष 2005 – प्रभागाध्यक्ष, नदीय प्रभाग, भाकृअनुप-केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर; वर्ष 2007 – प्रधान वैज्ञानिक; वर्ष 2010 – प्रभागाध्यक्ष, जलकृषि, भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान; वर्ष 2012 – निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर; वर्ष 2019 – प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता केंद्र; वर्ष 2019 – प्रभारी वैज्ञानिक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता केंद्र।

डॉ. दामराय ने अपने कार्यकाल में बहुत से पुरस्कार जीते जिनमें से कुछ प्रमुख यहाँ दिए जा रहे हैं : भाकृअनुप टीम अनुसंधान पुरस्कार (मत्स्य पालन) 1994-96; फखरुद्दीन अली अहमद पुरस्कार, 2000-2001; आईएआरआई - हूकर पुरस्कार, 2000-2001; भाकृअनुप-डॉ. राजेंद्र प्रसाद पुरस्कार, 2010-11; फखरुद्दीन अली अहमद पुरस्कार, 2016; माननीय उपराज्यपाल, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह द्वारा प्रदत्त लेफ्टिनेंट गवर्नर्स कमेंडेशन अवार्ड, 2008; विशिष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार, सोसाइटी फॉर प्लांट रिसर्च, मेरठ, 2014; लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, अंडमान साइंस एसोसिएशन द्वारा प्रदत्त 'तटीय पारिस्थितिकी और संसाधन



प्रबंधन, 2014; फेलो, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी; फेलो, जूलॉजिकल सोसाइटी, कोलकाता; मानद फेलो, इंडियन इकोलॉजिकल सोसाइटी, लुधियाना; फेलो, अंडमान साइंस एसोसिएशन तथा फेलो, इंडियन सोसाइटी ऑफ कोस्टल एग्रीकल्चरल रिसर्च। संस्थान उन्हें स्वस्थ एवं सुखी अवकाश जीवन के लिए हार्दिक शुभ कामनाएँ देता है।

डा संजय भौमिक, मुख्य तकनीकी अधिकारी



संस्थान के मात्स्यिकी संसाधन एवं पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग में कार्यरत डा संजय भौमिक, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने दिनांक 31 दिसंबर 2021 को संस्थान की सेवा से अवकाश प्राप्त किया। डा भौमिक ने संस्थान में अपना कार्यकाल दिनांक 30.11.1989 को तकनीकी अधिकारी (सूक्ष्म

विज्ञान) के तौर पर आरंभ किया था। अपने मुख्य कार्य के साथ उनका संस्थान के अन्य कार्यों में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा, विशेषकर संस्थान के कार्यक्रमों के आयोजन और प्रबंधन में। अपने इस 32 वर्षों के सेवाकाल में उन्हें कई पदोन्नति मिली - वर्ष 2000 में वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, वर्ष 2005 में टी-7-8 (सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी) और वर्ष 2012 में टी-9 (मुख्य तकनीकी अधिकारी)। वर्ष 2008 में उन्होंने अपना पीएचडी पूरा किया। संस्थान उन्हें स्वस्थ एवं सुखी अवकाश जीवन के लिए हार्दिक शुभ कामनाएँ देता है।



संस्थान और भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरु की संयुक्त रूप से पीची, केरल में 'मछली फीड के रूप में उपयोग के लिए ब्लैक सोल्जर फ्लाई के बड़े पैमाने पर उत्पादन' पर एक प्रदर्शन बैठक

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र बेंगलुरु और भाकृअनुप-राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरु ने संयुक्त रूप से सरकारी मछली बीज हैचरी में 'मछली फीड के रूप में उपयोग के लिए ब्लैक सोल्जर फ्लाई के बड़े पैमाने पर उत्पादन' पर एक दिवसीय चर्चा सह प्रदर्शन बैठक का आयोजन किया। संस्थान के निदेशक डॉ. वि. के. दास के मार्गदर्शन में पीची, त्रिशूर जिला, केरल में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में राज्य के मत्स्य पालन विभाग, निजी मछली हैचरी और किसानों के लगभग 35 प्रतिभागियों ने भाग



🏠 nnewspananchery.com 6

പീച്ചി ഹാച്ചറിയിൽ ബ്ലാക്ക് സോൾജിയേഷൻ ഫ്ളൈ ഉൽപാദന പരിശീലന പരിപാടി നടത്തി

Prime News Pananchery - December 16, 2021

പീച്ചി ഗവ. ഫിഷ് സീഡ് ഹാച്ചറിയിൽ നടത്തിയ പരിശീലന പരിപാടിയിൽ പങ്കെടുത്തവർ

പീച്ചി. മത്സ്യ കൃഷിക്ക് തീറ്റയായി ഉപയോഗിക്കുന്ന ബ്ലാക്ക് സോൾജിയേഷൻ ഫ്ളൈ ഉൽപാദിപ്പിക്കുന്നതിനുള്ള പ്രായോഗിക പരിശീലന പരിപാടി പീച്ചി ഗവ.

लिया। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बेंगलुरु की प्रभारी और प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रीता पणिक्कर और डॉ. अमला उदयकुमार, वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) ने बैठक का आयोजन किया। श्रीमती जोमोल, सहायक मत्स्य विस्तार अधिकारी, सरकारी मछली बीज हैचरी, पीची ने बैठक के संचालन के लिए समन्वय किया। डॉ. प्रीता पणिक्कर ने 'फिश फीड में वैकल्पिक प्रोटीन स्रोत की आवश्यकता' पर व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में उन्होंने जलीय कृषि आहार में कीट प्रोटीन के उपयोग के वैश्विक परिदृश्य और मछली आहार में प्रोटीन पूरक के रूप में बीएसएफ के उपयोग में हुई प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने तिलापिया, अमूर कार्प और पंगास की वृद्धि पर विकसित बीएसएफ आधारित फीड के प्रयोगात्मक परिणामों के बारे में भी बताया। डॉ. अमला उदयकुमार ने 'ब्लैक सोल्जर फ्लाई के बड़े पैमाने पर उत्पादन' पर एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने कीट के जीवन चक्र, विभिन्न अपशिष्ट पदार्थों की क्षमता के बारे में बताया जो कीट के त्वरित गुणन के पक्ष में हैं। उन्होंने कीट के गुणन और जनसंख्या निर्माण को प्रभावित करने वाले कारकों पर भी विस्तार से बताया। ब्लैक सोल्जर फ्लाई के सामूहिक संवर्धन में शामिल कुछ प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के दौरान बातचीत की और प्रजनन से जुड़ी समस्याओं को व्यक्त किया। 'ब्लैक सोल्जर फ्लाई के पालन से संबंधित समस्याओं पर चर्चा की गई और कचरे के डिब्बे में अन्य मक्खियों के प्रजनन और इसे दूर करने के तरीकों पर चर्चा की गई। यह कार्यक्रम स्थानीय दैनिक समाचार पत्र में भी प्रकाशित किया गया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- पश्चिम बंगाल की 15 प्रकार की विभिन्न आर्द्रभूमि की पारिस्थितिक सेवाओं पर जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया, जो जलवायु परिवर्तन और मानवजनित दबाव के कारण इन आर्द्रभूमि की कुल पारिस्थितिक सेवाओं में हास का संकेत देता है। अधिकतम पारिस्थितिक सेवा सूचकांक (ईएसआई) बर्धमान जिले के पूर्वस्तली बील और नदिया जिले के चांद बील (ईएसआई = 94) में दर्ज किया गया। इसके बाद फतईपुर (नदिया) और भंडारदाहा (मुर्शिदाबाद) बील आते हैं। उत्तर 24 परगना के राजा बील में पारिस्थितिक सेवा सूचकांक न्यूनतम (ईएसआई = 54) पाया गया है।
- केरल में वेम्बनाड झील की अलग-अलग गहराई पर मिट्टी में संचयित कार्बन के अंतर पर एक अध्ययन किया गया जिसमें यह देखा गया कि 0-15 सेमी की गहराई पर थायक्टुसेरी और पेरुम्बलम की मिट्टी (3.07%, 0.48%) में तलछट मिट्टी (15-30 सेमी गहराई में कार्बन संचयन क्रमशः 0.46% और 0.12%) की तुलना में अधिक कार्बन संचयित होता है।
- हिमाचल प्रदेश के गोबिंदसागर जलाशय में पिछले दशक के वार्षिक मछली उत्पादन और वर्षा के संबंध के विश्लेषण से सकारात्मक संबंध का संकेत मिलता है। मछली उत्पादन और वर्षापात का संबंध स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि जलवायु प्राचल जलाशयों के मछली उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- कुशेश्वर अस्थान पक्षी अभ्यारण्य, दरभंगा, बिहार के आर्द्रभूमि में किए गए एक सर्वेक्षण यह बताते हैं कि कोसी-गंडक बेसिन में स्थित ये चौर स्थल मत्स्य पालन और जैव विविधता की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। आईयूसीएन रेड लिस्ट के अनुसार कुल 61 मछली प्रजातियां, 2 झींगा प्रजातियां और 2 केकड़ा प्रजातियां दर्ज की गईं और उनमें से 5 प्रजातियां संकट में, 3 प्रजातियां संकटग्रस्त और 1 प्रजाति (क्लारियास मागुर) लुप्तप्राय श्रेणियों में रखा गया।
- नवंबर 2021 में पटना, बिहार में गंगा नदी से मछली उत्पादन 0.906 टन दर्ज किए गए थे जिनमें सबसे अधिक *यूट्रोपिकथिस वाचा* (जिसे आमतौर पर वाचा के रूप में जाना जाता है) 0.55 टन (61.32%) दर्ज किया गया। आईयूसीएन रेड लिस्ट के अनुसार संकटग्रस्त प्रजाति, *बगरियस बैगेरियस* (जाइंट रिवर गूंच) 0.075 टन (8.34%) पाया गया। नवंबर 2021 के महीने में गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित कुल मछली पकड़ 08.87 टन था।
- पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के हाबरा-द्वितीय ब्लॉक में सतही जल में आर्सेनिक का स्तर 0.004-0.4 मिलीग्राम / लीटर पाया गया। इस क्षेत्र से एकत्र की गई मछलियों में भी आर्सेनिक की सांद्रता दर्ज की गई है। जैसे *लबियो बाटा*, *लबियो कतला*, रूपचंद और तिलपिया जैसी मछलियों की मांसपेशियों में आर्सेनिक की मात्रा 0.014-0.091 मिलीग्राम/किलोग्राम के बीच पाई गई। हालांकि, इन मछलियों के गलफड़ों में आर्सेनिक का संचय 10-20 गुना अधिक (0.29-0.99 मिलीग्राम/किग्रा) पाया गया।

- मुर्शिदाबाद जिले के धुलियान में फरक्का बांध के निचले क्षेत्र में हिल्सा मछली (आकार -185-383 मिमी) लैंडिंग 0.125 टन दर्ज की गई।

बैठकें

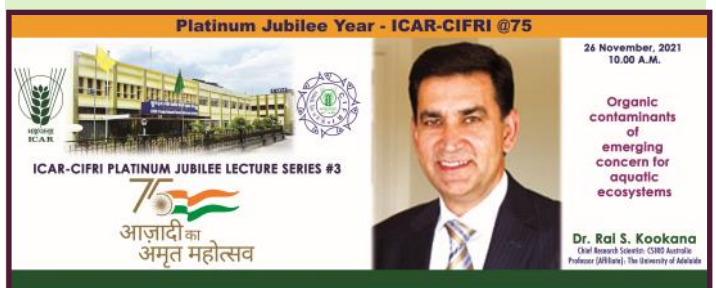
- संस्थान ने दिनांक 5 दिसंबर 2021 को प्रयागराज में राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एनएसआई) द्वारा आयोजित 91वें वार्षिक सत्र और संगोष्ठी 'आत्मनिर्भर भारत की ओर जैविक और भौतिक विज्ञान - एक संवदात्मक बैठक' (भारत की आजादी के 75 साल का जश्न-'आजादी का अमृत महोत्सव') (ऑनलाइन मोड) में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 21-23 दिसंबर 2021 के दौरान फरक्का बैराज परियोजना (एफबीपी) की तकनीकी सलाहकार समिति (टीएसी) की 117वीं बैठक में भाग लिया। बैठक का उद्देश्य फरक्का में मुख्य बैराज और हेड रेगुलेटर की मरम्मत और रखरखाव और इसके प्रतिस्थापन थे।
- संस्थान ने दिनांक 15-17 दिसंबर 2021 के दौरान कल्याणी विश्वविद्यालय में आयोजित "सुरक्षित भोजन, पोषण और बेहतर स्वास्थ्य के लिए पर्यावरण के सतत प्रबंधन के लिए एकीकृत दृष्टिकोण" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।



- संस्थान ने दिनांक 20 दिसंबर 2021 को नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण द्वारा आयोजित सरदार सरोवर जलाशय में एकीकृत मत्स्य प्रबंधन पर वर्चुअल बैठक में भाग लिया।

अन्य

- संस्थान में दिनांक 26 नवंबर, 2021 को आजादी के 75वें वर्ष के समारोह में ऑनलाइन प्लेटिनम जुबली व्याख्यान श्रृंखला संख्या 3 का आयोजन किया गया, जिसमें प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. राय एस. कूकाना ने "जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए नए कार्बनिक संदूषक" पर अपना व्याख्यान दिया।



- संस्थान में दिनांक 5 दिसंबर, 2021 को "विश्व मृदा दिवस - 2021" मनाया गया, जिसमें प्रख्यात वक्ता, डॉ. पी. मणि, प्रोफेसर, कृषि, रसायन और मृदा विज्ञान, विधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल ने "फसल और जल उत्पादकता बढ़ाने के लिए तटीय लवणीय क्षेत्र में मृदा स्वास्थ्य का पुनरुद्धार " पर एक व्याख्यान दिया।
- संस्थान में दिनांक 16 दिसंबर, 2021 को वाइब्रेंट गुजरात समिट 2021 में प्राकृतिक खेती पर माननीय प्रधान मंत्री के समापन भाषण का सीधा प्रसारण किया गया जिसमें 112 से अधिक लोगों ने भाग लिया।



- संस्थान ने दिनांक 20 दिसंबर 2021 को 'भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के खुलाजल मात्स्यिकी संवर्धन' पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला (वर्चुअल मोड) का आयोजन किया। इसमें विभिन्न राज्यों के मात्स्यिकी विभाग के निदेशकों, उप-निदेशकों, जिला मत्स्य विकास अधिकारियों (डीएफडीओ), अधीक्षक, आठ पूर्वोत्तर राज्यों के मत्स्य पालन (एसएफ), एफडीओ और विस्तार अधिकारियों, मात्स्यिकी महाविद्यालयों (लेम्बुचेरा, त्रिपुरा और राहा) के संकाय प्रमुख और प्रबंध निदेशक, असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड (एएफडीसी) तथा सिफरी के वैज्ञानिकों सहित 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 26 दिसंबर, 2021 को में सीधा प्रसारण के माध्यम से भारत के माननीय राष्ट्रपति के साथ भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया।
- संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, गुवाहाटी तथा एएफडीसी, लिमिटेड, गुवाहाटी द्वारा आयोजित "बाढ़कृत मैदानों में पेन में मछली पालन और उत्पादन और आजीविका वृद्धि" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया।

- संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने दिनांक 28 दिसम्बर 2021 को पश्चिम बंगाल के कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों को डब्ल्यू.बी.यू.ए.एफ.एस. में व्याख्यान दिया।



- संस्थान में दिनांक 30 नवंबर - 06 दिसंबर, 2021 के दौरान बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के प्रशिक्षु मछली किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें 30 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 7 दिसंबर, 2021 को श्रीनिकेतन, बीरभूम में अनुसूचित जाति उप-योजना और अनुसूचित जनजाति घटक के तहत जागरूकता सह मत्स्य-आदान वितरण का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 152 महिला लाभार्थियों ने भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 14-20 दिसंबर, 2021 के दौरान बिहार के सीतामढ़ी जिले के प्रशिक्षु मछली किसानों के लिए " अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें 30 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।
- अन्तर्स्थलीय खुले पानी में अलवाणीय जल में पिंजरे में मछली पालन पर मछुआरों की क्षमता निर्माण के लिए एनएफडीबी प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 15-17 दिसंबर 2021 से आयोजित किया गया था। इसमें पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों (नदिया, उत्तर 24 परगना, दक्षिण 24 परगना, पूर्वी मिदनापुर, हावड़ा, झारग्राम, पूर्वी बर्दवान बीरभूम, हुगली) के 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा अभियान के तहत दिनांक 18 दिसंबर 2021 को नगर गंगा, समिति, प्रयागराज द्वारा आयोजित नदी महोत्सव कार्यक्रम में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 22 दिसंबर 2021 को गंगा नदी घाट, बैरकपुर में नमामि गंगे के अंतर्गत नदी महोत्सव मनाया। इस अवसर पर गंगा आरती का आयोजन किया गया।
- संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, बंगलौर के वैज्ञानिकों की एक टीम ने 13-17 दिसंबर, 2021 के दौरान कर्नाटक के जलों में, "पिंजरे में मछली पालन के लिए उपयुक्त स्थलों का चयन" विषय पर कृष्णा राजा सागर, अलमट्टी और नारायणपुरा जलाशय का दौरा किया और मत्स्य विभाग, भारत सरकार के अधिकारियों के साथ जलाशयों का सर्वेक्षण किया।

सिफरी ने किया 'विश्व मृदा दिवस'-2021 का आयोजन

बैरकपुर • दबंग रिपोर्टर

षट्क-अनुप-केंद्रीय अन्तःस्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 5 दिसंबर को बैरकपुर मुख्यालय में 'विश्व मृदा दिवस-2021' का आयोजन ऑनलाइन और ऑफलाइन माध्यम से किया। जिसमें कृषि उत्पादन और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए मिट्टी के स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. पवित्र मणि, प्रमुख एवं वैज्ञानिक और विभागाध्यक्ष, कृषि रसायन विज्ञान और मृदा विज्ञान विभाग, बिजान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, (बीसीकेबी), मोहनपुर, नरदिय, पश्चिम बंगाल उपस्थित थे। संकुल राष्, महासभा ने दिसंबर 2013 में 5 दिसंबर को विश्व मृदा दिवस के रूप में नामित किया जो वर्ल्ड बैंक के समग्र एच.एच. किंग धूमिलोले अदुलगायज का जन्मदिन है और जिन्होंने आधिकारिक तौर पर इस आयोजन



की संजूरी दी थी। ग्लोबल सॉलल पॉर्टनरशिप ने विश्व मृदा दिवस -2021 को होस्ट सेल सेलिनाइजेशन, ब्रिटिंग सॉलल प्रोडक्टिविटी विषय को समर्पित किया है।

इस कार्यक्रम में देश के वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों, राज्यों के मत्स्य विभागों के अधिकारियों, छात्रों, शोधार्थियों, किसानों, उद्यमियों सहित 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग

लिखा। इस अवसर पर प्रो. मणि ने फसल और जल उत्पादकता बढ़ाने के लिए हटौय लवणीय क्षेत्र में मृदा स्वास्थ्य के पुनरुद्धार पर सलाह प्रस्तुति दी। इसके बाद किसानों, छात्रों और वैज्ञानिकों के साथ पारस्परिक संवाद सत्र में महत्वपूर्ण मुद्दों, जैसे कृषि उत्पादन प्रणाली के संबंध में हटौय मिट्टी को समझना आदि पर विचार मंथन किया।

संस्थान के निदेशक, डॉ. वि के दास ने अपने उद्घाटन भाषण में वर्ष 2022 तक किसानों की आब को दोगुना करने के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में मृदा स्वास्थ्य के रखरखाव पर जोर दिया और यह कहा कि कृषि रसायनों और मृदा वैज्ञानिकों को राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा के लिए मिट्टी के पर्यावरण स्वास्थ्य को बनाए रखने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। आने वाले दिनों में अन्तःस्थलीय खुला जल क्षेत्रों को मृदा स्वास्थ्य काई प्रदान करने एक सरावनीय प्रयास होगा जिससे मात्स्यकी संवर्धन द्वारा अधिक उत्पादकता प्राप्त किया जा सके।



बर्तमान
कलकत्ता और शहरतलि
सिफरि ओ
बिसिकेभिते
विश्व सिफरि सम्बन्धित

दबंग दुनिया
प्रादेशिक
नई दिल्ली, गुवाग, 09 दिसंबर 2021
www.dabangdunia.co

कलकत्ता ओ शहरतलि सिफरि ओ बिसिकेभिते विश्व सिफरि सम्बन्धित

निज्म प्रतिनिधि, बाराकपुर ओ संहवाददाता, कल्याणी: रबिबार, ९ डिसेम्बर बाराकपुरे आईसिएआर-सिफरिते एबं विधानचन्द्र कृषि विश्वविद्यालये पालित हल 'ओयार्ड सयेल डे' तथा विश्व माटि दिवस। सिफरिते एकाटि ओयेबनारेर आयोजन करा हयेछिल। सेखाने सिफरिर डिरेक्टर डः बसन्तकुमार दास, विधानचन्द्र कृषि विश्वविद्यालयेर एग्रिकालचाराल केमिस्ट्रि अ्यान्ड सयेल सायेंसेर अध्यापक पवित्र मणि सह अनेकेइ उपस्थित छिलेन। उपकूलवर्ती एलाकाय नोना अष्वले माटिर स्वास्थ फेरानो, उपादनशीलता वृद्धि प्रभृति विषय निये आलोचना हय। एइ ओयेबनारे देशेर विभिन्न प्रास्त थेके १०० जन अंशग्रहण करेछिलेन।

सिफरी ने कृषिरत महिला दिवस मनाया, विचार मंथन सत्र का आयोजन



रथिंद्र कृषि विज्ञान केंद्र, श्रीनिकेतन, बीरभूम में किया गया आयोजन

सिफरी वैज्ञानिक और महिला स्वयंसेवी समूह के बीच संवाद



बीरभूम • दबंग रिपोर्टर

रथिंद्र कृषि विज्ञान केंद्र, श्रीनिकेतन, बीरभूम में वैज्ञानिक-महिला स्वयंसेवी समूह के बीच पारस्परिक संवाद का आयोजन किया गया। इस संवाद का आयोजन रथिंद्र कृषि विज्ञान केंद्र, विश्व पारो, श्रीनिकेतन के सहयोग से किया गया था। जिसमें बीरभूम जिले के 16 स्वयंसेवी समूह से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय के कुल 152 लाभार्थियों ने भाग लिया। इस संवाद का उद्देश्य लाभार्थियों को अन्तःस्थलीय मात्स्यकी प्रबंधन के बारे में जागरूक करना है। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. वि के दास ने

पोषण और आवृद्धि हेतु अन्तःस्थलीय मत्स्य पालन के लाभ के साथ क्षेत्रीय स्तर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के योजनाओं के माध्यम से संचालित आजीवनिक सुधार कार्यक्रमों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने अन्तःस्थलीय जल निकासों में मछलियों में होने वाले रोग संक्रमण तथा इसके प्रबंधन के बारे में भी चर्चा की। डॉ. एम. ए. हसन, प्रभागाध्यक्ष, एफआरएफ; डॉ. ए.के. दास, प्रभारी, प्रशिक्षण एवं विस्तार कक्ष; डॉ. अण्णा रथि, नोडल अधिकारी आदिवासियों उप-योजना ने अन्तःस्थलीय मात्स्यकी प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तृत तौर पर बताया। कृषि विज्ञान केंद्रप्रमुख डॉ. सुब्रतो मंडल ने महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए आय के वैकल्पिक स्रोत के रूप में अन्तःस्थलीय मत्स्य पालन के महत्व पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में महिला प्रतिभागियों ने सिफरी के सहयोग से लाभान्वित होने पर अपनी प्रतिक्रिया दी।

स्वयं सहायता समूह को बहुत लाभ हुआ

इस क्रम में आदिवासी महिला सदस्य, सुकृती मारुटी ने कहा कि उनके स्वयं सहायता समूह को संस्थान के विकसित तकनीकों तथा प्रदत्त आदानों से बहुत लाभ हुआ है। लाभार्थियों ने अन्तःस्थलीय मत्स्य प्रबंधन में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों के बारे में चर्चा की। इस अवसर पर आदिवासी उप-योजना और अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति समुदाय के लाभार्थियों को आजीवनिक वृद्धि के लिए मत्स्य बीज, मछली चारा, चूना जैसे मत्स्य विकास के लिए आदान वितरित किए गए।

संस्थान आदिवासी उप-योजना और अनुसूचित जाति उप-योजना के तहत रथिंद्र कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से प्रदर्शनोत्तर जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करता रहा है। इस क्रम में 7 दिसंबर, 2021 को दोपहर सत्र में आदिवासी महिला सदस्यों के तहत रथिंद्र कृषि विज्ञान केंद्र के सहयोग से प्रदर्शनोत्तर जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रकाशन मंडल
प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,
संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मोर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास
फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।
भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तःस्थलीय मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान, (आइएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत
दूरभाष: +91-33-25921190/91; फॅक्स: +91-33-25920388; ई-मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in